JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

रामवृक्ष बेनीपुरी के निबन्धों में प्रयुक्त शैलियाँ

नाम : नरेन्द्र

शोधार्थी, हिंदी विभाग

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली-07

संपर्क सं. : 9873598108

इमेल : narenderdl6@gmail.com

बेनीपुरी जी साहित्य-स्रष्टा होने के साथ-ही-साथ एक अनोखे शैलीकार रहे हैं। वास्तविकता तो यह है कि साहित्य-स्रष्टा की टूना में उनका यह शैलीकार रूप ही अधिक उज्जवल प्रतीत होता है और अपनी शैलीगत विशेषता के कारण ही उनका साहित्य अविस्मरणीय बन पड़ा है। जहाँ तक इनके निबंधों में विभिन्न शैलियों के प्रयोग की बात है, इन्होंने मुख्य रूप से प्रसाद-शैली, आवेग-शैली, चित्रात्मक-शैली और व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। इनसे इतर शैलियों का प्रयोग भी विषयानुकूल इनके निबंधों में परिलक्षित होता है। हाँ, यह ज़रूर है कि आवेग और चित्रात्मक शैली की प्रधानता इनके निबंधों में सर्वत्र ही दिखाई दे जाती है। बेनीपुरी के निबंधों में प्रयुक्त शैलियों का संक्षिप्त विवेचन करना ही प्रस्तुत शोधालेख का मूल धेय्य है।

श्री रामवृक्ष बेनीपुरी ने अपने वर्णनात्मक एवं विवरणपरक निबंधों में प्रायः 'प्रसाद' शैली का ही प्रयोग किया है। इस शैली में लिखे उनके निबंधों में सरलता, सहजता, सुबोधता, सुगठित वाक्य-रचना और भाषा का संयत प्रयोग उद्भासित हुआ है। इस शैली की रचनाओं में गत्यात्मकता का अभाव दिखाई देता है। अपने कथ्य को समझाने का सीधा-साधा ढंग, कभी-कभी स्वानुभूत चिंतन और राष्ट्र प्रेम व संस्कृति का शेड आदि। ये बातें ही बेनीपुरी की रचनाओं में प्रसाद शैली की पहचान प्रकट करते हैं। प्रसाद शैली का एक उदाहरण उनके निबंध से दृष्टव्य है-

"मैथिली का साहित्य सिर्फ वह साहित्य नहीं है जो दरबारों में रचा गया और कागज़ पर लिखा गया। मैथिली साहित्य का मधुरतम अंश वह है जो खेतों, खलिहानों, आँगनों और मंडपों में रचा गया और हज़ारों-लाखों कंठों और जिह्वाओं का आश्रय पाकर मिथिला के कोने-कोने को आप्यायित किया करता है। उन अलिखित काव्यों और संगीतों में मिथिलावासियों की शततः आकांक्षाएँ और अभिलाषाएँ, वीरताएँ और

मनुहारें परिलक्षित हैं। लोरिक, सलहेस, बिहुला, सोंठी के ऐसे अलिखित काव्य हैं जो कई-कई दिनों तक लगातार गाए जाने पर ही समाप्त होते हैं। फिर हर ऋतु, हर उत्सव, हर पर्व के हज़ारों गीत हैं। सोहर है, साँझरि है, जट जटिन हैं, चाचर है, बिरहा है- कहाँ तक गिनाए जाएँ।"1

उक्त उदाहरण में बेनीपुरी ने अपनी बात को अत्यंत सीधी, सरल और संयत भाषा में अभिव्यक्त किया है। बेनीपुरी जी की 'प्रसाद शैली' की विशेषता यह है उसकी भाषा में माधुर्य गुण का भी समावेश दिखाई देता है।

बेनीपुरी ने जहाँ भी प्रसाद शैली का प्रयोग किया है, वहाँ इनके वाक्य-गठन और पैराग्राफ प्रायः छोटे-छोटे न होकर लम्बे प्रतीत होते हैं। बावजूद इसके यदि हम गहराई से अध्ययन करें तो पायेंगे कि छोटे-छोटे वाक्य और पैराग्राफ में लिखना ही बेनीपुरी की शैली की विशेषता है। इनके वाक्य ज्यादा लंबे भी नहीं हैं। इस तरह हम पाते हैं कि बेनीपुरी जी ने अपने ज्यादातर विचारपरक और विवरणपरक निबंधों में 'प्रसाद शैली' का प्रयोग ही किया है।

बेनीपुरी जी ने अपने भावपरक एवं ललित निबंधों में 'आवेग शैली' का अधिक प्रयोग किया है। इनके आवेगपूर्ण शैली के निबंधों में इनका हृदय कल्पना एवं विचारों की तरंग पर दोलायमान लक्षित होता है। आवेग शैली के निबंधों में भावों से जुड़े भाव और विचारों से जुड़े विचारों की श्रृंखला अनवरत उद्भासित होती है। आवेगपूर्ण शैली की विशेषता को लेकर स्वयं बेनीपुरी जी का कहना है कि, "लिखते समय मेरे विचारों और मेरी लेखनी में जैसे होड़-सी लग जाती है -विचार जैसे चेल्हवा मछली- तड़पती, उछलती, चमकती, लेखनी जैसे जाल- छोटे घेरे का, कच्चे सूत का। जाल में आने से पहले ही, माँझी को ललचाकर, जैसे मछली निकल भागना चाहती हो। किन्तु, माँझी उसे छोड़े तो कैसे ? इसलिए बहुत तेज लिखता हूँ- व्याकरण तक कि सुधि मुझे नहीं रहती है। उस समय पीछे गोद-गाद कर लिया करता हूँ। इस तेज रफ्तारी के कारण जब तक होल्डर रोशनाई से लिखता रहा, बड़ी दिक्कत होती थी। अब शेफर-फाउन्टेन पेन से लिखा करता हूँ- सर-सर, सर-सर।"2

इनके द्वारा आवेगपूर्ण शैली में लिखे निबंधों में काव्यात्मकता, गतिशील बिम्बात्मकता और भावात्मकता के रूप दिखाई देते हैं। बेनीपुरी के आवेग शैली प्रधान निबंधों में इनकी भाषा का जादू और भाव तथा विचार प्रबंधन देखने लायक होता है। भाव एक के बाद एक गतिशील अवस्था में चले आते हैं। इस तरह स्पष्ट है कि आवेग शैली का सुनियोजित प्रयोग बेनीपुरी जी की शैली की प्रमुख विशेषता है।

चित्रात्मक शैली में भावों एवं विचारों की अभिव्यक्ति करने में बेनीपुरी जी सिद्धहस्त नज़र आते हैं। बेनीपुरी जी के ललित निबंधों में इस शैली का सबसे अधिक प्रयोग हुआ है। इनके भावपरक, वर्णनात्मक एवं विवरणात्मक निबंधों में भी कहीं-कहीं चित्रात्मक शैली का विधान दिखाई देता है। चित्रात्मक शैली का एक उदाहरण विचारणीय है-

"यह नीरभ्र आकाश, ये चकमक तारे, यह पूर्णचंद्र, यह भीना-भीना वातावरण ! यह क्या घर में बैठने का पड़े रहने का समय है ? बाहर निकलो, रास रचाओ, धूम मचाओ ।

अभी-अभी स्नान करके निकली यह पृथ्वी !-सघः स्नाता, अनावृत्ता, अनलंकृता, दिगंबरा! चाँदनी की एक पतली-सी चादर डाल दी हैं पूर्णचंद्र ने जिस पर । किंतु फानूस के अंदर की लौ-सी जिसकी सौंदर्य राशि निखरी पड़ती है, बिखरी पड़ती है! सौंदर्य की लूट मची है और तुम घर में बैठी हो, पड़ी हो-घर से निकलो, निकलो, ओ राधे, ओ अनुराधे!

यह उन्मुक्त आकाश! कितने दिनों पर बादलों के नाग-पाश कटे हैं इसके । अपने विस्तार में समा नहीं रहा है जैसे । रह-रह हुमक रहा है गाढ़ालिंगन करने को, हाथ नहीं तो स्वयं झुककर पास आ जाना चाहता है, वसुंधरा से एकाकार हो जाना चाहता है। देखो, देखो, आज धरा और अधर का मिलन-पर्व है ।"3

बेनीपुरी जी के चित्रात्मक शैली में इनकी लेखनी तो हैण्डकैमरा का काम करने लगती है । वर्ण्य-विषय का पूरा का पूरा दृश्य पाठक की आँखों के सामने प्रकट हो जाता है । पाठक को लगने लगता है कि जैसे कि वह पढ़ नहीं, बल्कि उस वर्णित भाव को अपनी आँखों से देख रहा है । चित्रात्मक शैली में बेनीपुरी जी की भाषा बड़ी ही गत्यात्मक एवं चुलबुली बन जाती है । छोटे-छोटे वाक्य, एक या दो पंक्तियों के पैराग्राफ, वर्ण-पुनरूक्ति इत्यादि का ही अधिकाधिक प्रयोग इस शैली में इन्होंने किया है । इस तरह स्पष्ट है कि बेनीपुरी के निबंधों में चित्रात्मक शैली का प्रचुरता से प्रयोग हुआ है ।

बेनीपुरी जी के निबंध-शैली की एक प्रमुख विशेषता उनकी व्यंग्यात्मक शैली रही है । "उनका व्यंग्य बड़ा ही सरस और मनोरंजक होता है । इससे चुभन और गुदगुदी की अनुभूति होती है । अनुचित व्यवस्था, असंगति और अनपेक्षित पर उन्होंने भरपूर चोट की है । उनका व्यंग्य केवल विनोद के लिए नहीं है । ऐसे स्थलों पर व्यंग्य शैली ने अपना कौशल दिखाया है ।"4 बेनीपुरी जी की व्यंग्य शैली सरसता, सहजता, वाक्-चातुर्य, लक्षणा तथा नुकेलीपन से युक्त है । इनके व्यंग्य में एवं प्रयोग अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं । निम्न उदाहरण में इनका व्यंग्य लक्षणा एवं नुकीलेपन से परिपुष्ट नज़र आता है–

"अब तो एक ही आदमी हर प्राचीन ग्रंथ पर प्रामाणिक टीका प्रस्तुत करने की योग्यता रखता है । चार टीकाएँ सामने रख लीं, नई टीका बना ली । कोषों की भी यही दशा है । 'हिन्दी-शब्द-सागर' के लिए आधे दर्जन उच्चकोटि के विद्वानों ने वर्षों लगातार परिश्रम किया । लीजिए, रास्ता खुल गया- अब हर प्रकाशक का अपना 'कोष' है, जो उसके रत्नकोष को दिन-रात भरा करता है । कालेजों में हिन्दी की पढ़ाई क्या शुरू हुई, हिन्दी साहित्य और भाषा की दुर्गति का शुभारम्भ हुआ । अब हर हिन्दी-प्रध्यापक (!) भाष्यकार है, आलोचक है । वह बड़ों-बड़ों पर फतवा दे सकता है और उसके फतवे को अकाट्य मान कर विद्यार्थियों को उस पर चलना है । नहीं चलोगे, तो परीक्षा-फल के समय देख लेना ।"5 इस तरह स्पष्ट है कि बेनीपुरी की व्यंग्यात्मक शैली में तीखापन, श्लेषात्मकता और परिहास का संतुलित प्रयोग किया गया है ।

बेनीपुरी जी जहाँ कम शब्दों में अधिक बात कहना चाहते हैं, वहाँ वे समास शैली का प्रयोग करते नजर आते हैं। इनके निबंधों में जहाँ किसी व्यक्ति, प्रकृति अथवा भाव का वर्णन किया गया है, वहाँ भी समास शैली दृष्टिगत हो जाती है। इसके अतिरिक्त विचारपरक निबंधों में भी उक्त शैली के उदाहरण लक्षित होते हैं। बेनीपुरी जी की समास शैली का एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"समाज को अगर एक वृक्ष मान लिया जाए तो अर्थनीति उसकी जड़ है, राजनीति आधार, विज्ञान आदि उसके तने हैं और संस्कृति उसके फूल।"6

बेनीपुरी के विचारपरक निबंधों में जहाँ भी समास शैली प्रयुक्त हुई है, वहाँ कथन एक प्रकार से सूत्र-रूप ग्रहण करते दिखाई देते हैं। यथा-

"समाज की सारी साधनाओं की परिणति उसकी संस्कृति में है। जड़ में खाद-पानी दीजिए; तनों की रक्षा किजिए; किंतु नज़र रखिए फूल पर! गुलाब पर! संस्कृति पर!"7

बेनीपुरी जी के विचारपकरक निबंधों में 'विवेचन शैली' का सुनियोजित प्रयोग लक्षित होता है। इस शैली में बेनीपुरी जी ने खंडन–मंडन, तर्क-वितर्क, चिन्तन–अनुचिन्तन आदि को अभिव्यक्ति दी है। इनके 'विवेचन शैली' की तर्कपुष्टता इनके निबंधों के परिप्रेक्ष्य में विशेष रूप से उल्लेखनीय है-

"व्यक्ति और समाज में जो अन्तर है, वही है लोक-गीत और काव्य-गीत में।

काव्य-गीत में कारीगरी की अधिकता आप पा सकते हैं- वर्ण और शब्द, नपे-तुले स्वर और ताल बँधे-बँधाएँ अलंकार की वह लता, झंकार की भरमार।

लोक गीतों में हृदय के उद्गार ही उद्गार होते हैं। न कोई निश्चित छंद, न कोई निश्चित सुर। भाव और भाषा का वैसा प्रवाह होता है उनमें कि कंठ से निकलते ही हृदय में घर कर लेते हैं वे?"8 विवेचन शैली में अन्य शैलियों की टूना में भाष प्रायः कठिन हो जाती है, किंतु बेनीपुरी के विवेचन शैली में भाषा की सरलता और सहजता आरम्भ से अंत तक बनी रहती है।

जहां कहीं भी बेनीपुरी जी अपने निबंधों में अपने भावों को स्वच्छंद रूप से दौड़ने, विचरने अथवा उड़ने के लिए छोड़ देते हैं, वहाँ हमें 'विक्षेप शैली' के दर्शन होने लग जाते हैं। बेनीपुरी जी अत्यंत भावुक एवं हृदयशील रचनाकार रहे हैं। उनके इस संयमित व्यक्तित्व की छाप उनके निबन्धों में भी पड़ी है। जहाँ उनकी भावनाएँ वेगवती बन पड़ती है, वहाँ वे विक्षेप शैली का प्रयोग करते दिखाई देते हैं। उनके भावपरक एवं ललित निबंधों में विक्षेप शैली के अनेक उदाहरण मिल जाते हैं। एक उदाहरण द्रष्टव्य है-

"और जिस दिन गोपी चुई!

ओहो– गोपी! आम की किसी निभृत डाली में, पत्तों की झुरमुटों में छिपी, आकार में कुछ पतली, चुपचाप पृथ्वी का रस पीती, सूर्य किरणों से लुक्का-चोरी खेलती, हवा से दुलार पाती-लोक-लोचनों से बिल्कुल

दूर-दूर, जवानी से गदराती, कुछ-कुछ पीली-पीली पड़ती जाती किंतु गालों पर अप्रतिम लालिमा लिए- यह आम्र-किशोरी! किसने इसे 'गोपी' नाम दिया- एक दिन भोरे भोरे चू पड़ी, तो सारी अमराई में हलचल मच गई- गोपी चुई! गोपी चुई!

फिर तो होड़ लगी, कौन ऐसा सौभाग्यशाली है, जिसे गोपी प्राप्त होगी।"9

बेनीपुरी जी की विक्षेप शैली में भाषा कुछ असम्बद्ध, भावुकता से परिपूर्ण और पुनरावृत्ति से युक्त नज़र आती है।

बेनीपुरी जी के निबंधों में 'प्रलाप शैली' के अनेक उदाहरण भावपरक एवं ललित निबंधों में मिल जाते हैं। जहाँ वे अतिशय भावावेश के कारण भावनाओं में बहने लग जाते हैं और प्रलाप की-सी स्थिति तैयार होने लग जाती है, वहाँ 'प्रलाप-शैली' दिखायी देती है। बेनीपुरी की 'प्रलाप शैली' में भाव कभी ओजपूर्ण उक्तियाँ, कभी पश्चाताप्, कभी अतिशय विनम्रता के स्वर तो कभी आत्मसमर्पण की भावना प्रकट होने लग जाती है। एक उदाहरण दृष्टव्य है-

"जब 'हिय की आँखें' मुँद गईं, तो ये चर्मचक्षु क्या करें, बेचारे! हाँ, हम आज आँख रहते हुए भी अन्धे हो चले हैं! अन्धकार में टटोल रहे हैं, भटक रहे हैं!"10

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि रामवृक्ष बेनीपुरी शैली के स्तर पर किसी भी मायने में बालकृष्ण भट्ट और आचार्य शुक्ल से निम्न श्रेणी के निबंधकार नहीं ठहरते, बल्कि उनके समतुल्य प्रतीत होते हैं।

सन्दर्भ सूची

1. बेनीपुरी, 'हवा पर', 'मैथिलि साहित्य', बेनीपुरी ग्रंथावली, भाग-03, पृष्ठ-27

2. वही, पृष्ठ-17

3. बेनीपुरी, 'सतरंगा धनुष', 'जानि सरद-रितु खंजन आए!', बेनीपुरी ग्रंथावली, भाग-01, पृष्ठ-370

4. डॉ. हरिमोहन, 'प्रतिनिधि हिंदी निबंधकार', पृष्ठ-97

5. बेनीपुरी, 'वंदे वाणी विनयकौ', 'साहित्यिकता और साधुता', बेनीपुरी ग्रंथावली, भाग-03, पृष्ठ-114

6. बेनीपुरी, 'मशाल', 'नई संस्कृति की ओर', बेनीपुरी ग्रंथावली, भाग-03, पृष्ठ-41

7. वही

8. बेनीपुरी, 'हवा पर', 'बिहार के लोकगीत', बेनीपुरी ग्रंथावली, भाग-03, पृष्ठ-21

9. . बेनीपुरी, 'सतरंगा धनुष', 'जब मंजरियाँ फूटी', बेनीपुरी ग्रंथावली, भाग-01, पृष्ठ-360-61

10. बेनीपुरी, 'मशाल', बेनीपुरी ग्रंथावली, भाग-03, पृष्ठ-35-36